B.M.A. College, Baheri, Darbhanga

B.A. (Hons): Part-I
Paper-I
Deptt. of Sociology

Date:- 07/07/2020
By: Dr. Rajesh Kumar
Deptt. of Sociology

विषय:- समाजशास्त्र की प्रकृति एवं स्रोत

एक विज्ञान के रूप में समाजशास्त्र की प्रकृति को समझने के लिए यह जरूरी है कि सबसे पहले यह जानें कि समाजशास्त्र क्या है।

शाब्दिक दृष्टिकोण से समाजशास्त्र अंग्रेजी-शब्द 'Sociology' का हिन्दी रूपान्तर है जो 'Socius' और 'Logus' से मिलकर बना है. एक अर्थ समाज और दूसरे का विज्ञान है. जिसका यह अर्थ हुआ कि [illegible] वैसा शास्त्र जो किसी भी घटना का अध्ययन वैज्ञानिक पद्धति से करता है। जे.एस. मिल Sociology को Ethology (आचारशास्त्र) के नाम से भी पुकारते हैं।

वास्तविकता यह है कि विज्ञान का आशय किसी-विशेष विषय से नहीं होता, बल्कि विज्ञान स्वयं में एक प्रकृति है।

समाजशास्त्र की वैज्ञानिक प्रकृति है:-

समाजशास्त्र का विषय तथ्यात्मक है।
समाजशास्त्र कार्य-कारण के सम्बन्धों का विश्लेषण करता है।
समाजशास्त्र नियमों की परीक्षा एवं पुनर्परीक्षण करता है।
यह वर्तमान के आधार पर भविष्यवाणी करता है।
यह वास्तविक-घटनाओं का विवेचन करता है।

समाजशास्त्र के अध्ययन स्रोत को दो प्रकार के स्पष्ट किया जा सकता है।

समाजशास्त्र एक विशेष विज्ञान है।
समाजशास्त्र एक सामान्य विज्ञान है

इन दोनों विचारों को हम ① स्वरूपात्मक सम्प्रदाय एवं ② समन्वयात्मक सम्प्रदाय में बाँट सकते हैं।

स्वरूपात्मक सम्प्रदाय! इसके समर्थक जार्ज सीमेल, मैक्स वेबर, टॉनिज, वीरकान्त, वान विजे आदि हैं। इसे विशेषवादात्मक सम्प्रदाय भी कहते हैं। इसके अनुसार समाज के समूहों एवं व्यक्तियों में सामाजिक सम्बन्ध होते हैं जिसे समाजशास्त्र के स्रोतों में केवल-आ सकता है।

समन्वयात्मक सम्प्रदाय:- इसके समर्थक दुरखीम, हॉबहाउस, सोरोकिन, गिन्सबर्ग आदि हैं। इसके अनुसार समाजशास्त्र एक विशेष विज्ञान नहीं बल्कि सामाजिक सम्बन्धों का एक सामान्य विज्ञान है। यह समाज की सामान्य विशेषताओं